ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 181-182**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

डिजिटल इण्डियाः बदलता ग्रामीण समाज

डॉ० सुनीता गुप्ता
असि० प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, किसान पी०जी० कॉलेज, रकसा, रतसर, बलिया (उ०प्र०) भारत

Received-06.09.2024, Revised-13.09.2024, Accepted-19.09.2024 **E-mail : sunitagupta7911@gmal.com**

सारांशः ***सूचना, सम्पर्क, संवाद और संचार सभी एक ही प्रकिया के अंग है, जो आपस में सम्वन्ध बनाकर जन मानस के बीच, संस्कृति एवं सभ्यता का निर्माण करते हैं। चूंकि मानव एक सामाजिक प्राणी है, अतः समूह के बीच परस्पर संवाद के कारण ही कोई समाज संगठित हो पाता है, साथ ही समाज में अलग से उनकी पहचान बनती है, मानव– समाज व्यक्तियों का एक समूह ही नहीं होता, वरन् अपनी मान्यताओं, विश्वासों और विशिष्ट जीवन शैली से ही जाना जाता है। जीवन के अनवरत प्रवाह में लोगों के बीच जो अन्तरू सम्बन्ध और संवाद चलता रहता है। उसे कम्यूनिकेशन के नाम से जाना जाता है। 'सम्पर्क एवं संवाद के अविरल चक्र को भारतीय चिंतन में 'संचार' कहा गया है। जैसे–जैसे टेक्नोलॉजी का विकास होता गया, सामूहिक संचार का दायरा बढ़ता गया और आज जन परिधि में पूरी दुनिया एक हो चुकी है।'[1]***

कुंजीभूत शब्द– डिजिटल इण्डिया, ग्रामीण समाज, सम्पर्क, संवाद, संचार, संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक प्राणी, मान्यता

औद्योगिक क्रान्ति की तरह, संचार क्रांन्ति ने भी दुनिया वालों के रहन–सहन, बाजार, अर्थ व्यवस्था, सामाजिक दशाओं एवं उनकी सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। मोबाइल के विभिन्न एप के माध्यम से शिक्षित–अशिक्षित, साक्षर–असाक्षर, ग्रामीण एवं शहरी व्यक्ति के बीच की दूरी को मिटा रहा है। ग्रामीण स्तर पर भले ही लोग, शहरी लोगों की अपेक्षा कम शिक्षित है, किन्तु मोबाइल के द्वारा यूट्यूब, फेसबुक, ट्विटर, ईमेल, इंस्टाग्राम, गूगल आदि का उपयोग अपनी सुविधा व इच्छानुसार कर रहें है।

'संचार प्रणाली के द्वारा ही समाज में गतिशीलता बनी रहती है। सामाजिक विकास की इस प्रक्रिया में मनुष्य एवं अन्य जीवों में महत्वपूर्ण अन्तर है, जहाँ अन्य प्राणियों का विकास केवल उनकी प्रवृत्ति के अन्दर निहित प्रेरक तत्वों के कारण होता है, वहीं मनुष्य अपनी सोच और समझ में आये बदलावों से भी अपने सामाजिक परिवेश को बदलता रहता है। लोगों में विचारों को लेकर जो परस्पर संवाद–संचार चलता रहता हैं, संस्कृति का रूप उसी से बनता है। समाज को बदलती परिस्थितियों की चुनौतियों से निपटने, उनके साथ सामजस्य बिठानें और एक पीढ़ी के अच्छे–बुरे अनुभवों को आगे वाली पीढ़ियों के लिए प्रस्तुत करने में संस्कृति की भूमिका रहती है।'[2]

आई.सी.टी. का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक दृष्टिकोण से प्रभाव, व्यवहार, चिंतन के ढंग, खान–पान, पहनावे से लेकर सामाजिक, राजनीतिक, भाषिक जागरुकता, व्यावहारिक दृष्टिकोण एवं जीवन शैली पर स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। डिजिटलीकरण को वित्तीय परिवर्तन के रूप में देखा जा रहा है, जो डेटा के उत्पादन, माप, प्रसार के उन्नत नवाचारों के उपयोग के कारण हुआ है। 'वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर किसी देश का डिजिटाईजेशन स्कोर 10% बढ़ता है तो उसकी जी.डी.पी. में प्रति व्यक्ति 0.75% की वृद्धि होगी।'[3] भारत में डिजिटल इण्डिया की शुरुआत राजीव गांधी के समय से हुई हैं, किन्तु 2006 में भारत सरकार ने 'ई गवर्नेंस' पहल की शुरुआत की, परन्तु मन्थर गति से बढ़ने के कारण उस मिशन का प्रभाव ग्रामीण जनता पर अधिक नहीं पड़ सका। वर्तमान सरकार ने ई–गवर्नेंस मिशन को आगे बढ़ाते हुए 2015 में श्डिजिटल इण्डिया' की शुरुआत की जिसका उद्देश्य मूलभूत सुविधाओं को ग्रामीण जनता तक पहुंचाना है।

'डिजिटल इण्डियाश का मुख्य उद्देश्य लगभग 2.5 लाख गाँवो तक 'राष्ट्रीय आप्टीकल फाइबर नेटवक' फैलाने का फैसला किया गया। साथ ही मोबाइल कनेक्टिविटी को आसान बनाना, युवाओं को आई. टी. सेक्टर में प्रशिक्षित रोजगार प्रदान करना, इलेक्ट्रानिक उपकरणों का स्वदेशी निर्माण करना, वैश्विक सूचनाओं को ग्रामीण स्तर तक पहुंचाना, फसलों के रख रखाव, मिट्टी की जाँच, खाद एवं बीज को उन्नत बनाना, समय पूर्व (अगेती फसल) की खेती करना एवं रख रखाव को डिजिटल बनाना, शिक्षा को आनलाइन एवं गुणवत्ता पूर्ण बनाना आदि बातों को शामिल किया गया है।

'डिजिटल अर्थव्यवस्था को तीसरी औद्यौगिक क्रांति माना जाता है। डिजिटल क्रांति, जिसे ष्इन्टरनेट ऑफ एवरीथिंग या 'इंटरनेट इकोनॉमी' के रूप में भी जाना जाता है। उससे नये बाजार विकसित होने, रोजगार के अवसर पैदा करने की उम्मीद है। ष्यह सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के द्वारा सक्षम आर्थिक गतिविधियों का एक विश्वव्यापी नेटवर्क है। सरल शब्दों में कहें तो यह एक डिजिटल तकनीकी आधारित अर्थव्यवस्था है।'[4]

किसी राष्ट्र की खुशहाली में वहां की विकसित सूचना तकनीकी का विशेष योगदान है। किसी राष्ट्र के उत्पादन में, वृद्धि, विकास, बाजार व्यवस्था, आर्थिक व्यापार, उस राष्ट्र के सूचना संग्रहण एवं विश्वव्यापी सूचना नीति व प्रचार–प्रसार पर ही उस राष्ट्र की शक्ति व सत्ता केन्द्रित है। इस समय सूचना व सोशल मीडिया के कारण किसी राष्ट्र में सत्ता का बनना बिगड़ना भी केन्द्रित हो गया है। सम्बन्धों की नई दुनिया में, जिसमें अब मोबाइल फोन, सोशल नेटवर्क और ह्वाट्सएप जैसे चौटिंग नेटवर्क का न सिर्फ प्रवेश हो चुका है, बल्कि उनसे सम्बन्धों को बनाने एवं बिगाड़ने की ताकत आ गयी है। अब कसमें, वादे–प्यार वफा सब कुछ स्क्रूटनी यानि जांच के दायरे में है। हमारे जीवन में मोबाइल फोन और इण्टरनेट अब हड्डियों के अन्दर तक समा गया है। हमारी हर हरकत, यहाँ तक कि सोचने का तरीका तक, अब अपने डिजिटल फुट प्रिंट छोड़ा जा रहा है।[5]

भारतीय ग्रामीण युवा महिलाओं के लिए इस डिजिटल युग में 'सोशल मीडिया' उनकी अधिकार, अभिव्यक्ति, आजादी एवं मुक्ति का मार्ग बन गया है। सोशल मीडिया के द्वारा भारत में ही नहीं पूरे विश्व में हो रही महिला सुधार व अधिकार की बातें सीधे– सीधे उन लोगों के पास पहुँच रही है। ग्रामीण स्तर पर स्त्री को लेकर हो रहे सामाजिक, आर्थिक,

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

राजनीतिक एवं धार्मिक भेदभाव के खिलाफ युवा ग्रामीण महिला मुखर हो रहीं हैं। 'मिसाल के तौर पर श्दिल्ली में निर्भया बलात्कार की घटना हो', '(16 दिसम्बर 2012)', 'सहारनपुर दंगा हो, देवरिया काण्ड, बलिया काण्ड और '# Natural selfi अभियान' में अपनी बिना मेकअप वाली फेसबुक फोटो और अन्य सोशल मीडिया मंचों पर अपलोड करती है। 'मीटू अभियान' आदि में भारतीय महिलाओं ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का मानना है कि– 'मानव संसाधन को कुशल बनाकर देश में तेज विकास दर सुनिश्चित किया जा सकता है। किसी को कौशल युक्त बनाने के लिए किसी डिग्री या उपाधि की जरुरत नहीं है। खुद को कौशल युक्त बनाकर कोई भी आत्म निर्भर बन सकता है। जब देश का हर युवा आत्म निर्भर होगा तो स्वाभाविक रूप से अर्थ व्यवस्था मजबूत होगी और देश में खुशहाली आएगी।[6]

इस डिजिटल युग में गांवों में जो पहले से स्थापित सैद्धांतिक वर्ण व्यवस्था का आदर्शीकृत प्रतिमान है, वह अब टूटने लगा है। गाँवों में बुनियादी स्तर पर बदलाव देखा जा सकता है। साम्प्रदायिक शक्तियों के बजाय, समरसता पूर्ण गाँव– समाज की अवधारणा को बल मिल रहा है। सोशल मीडिया कन्टेंन्ट के कारण ग्रामीण समाज के लोगों में फर्जी खबरों, दन्त कथाओं, मिथक, अन्धविश्वास, जादू– टोना, भूत–प्रेत, डायन प्रथा, दहेज प्रथा,जातिवाद आदि जैसी प्रभुत्वशाली, नकारात्मक शक्तियों के खिलाफ आवाज बुलन्द हुई है। 'भारतीय संस्कृति, शिक्षा, स्वास्थ्य, भाषा, विज्ञान और अध्यात्म सभी कुछ विदेशी प्रभाव के कारण विकृत होते जा रहें हैं। जो न तो भारतीय रह पा रहें और न तो पूर्णतः विदेशी। इस तरह से मिलावटी भारतीय जीवन शैली बनती जा रही है। संस्कृति के खुलेपन ने सोशल मीडिया के जरिये 'नई पीढ़ी इसे मार्डन विकास के रूप में 'एक दीवाने के रूप में स्वीकार करती जा रही है। इससे भारतीय उच्चता का भाव लुप्त हो गया है।'[7]

इस डिजिटल युग में का भारतीय अप्रशिक्षित समाज एवं युवा वर्ग ज्यादा डिजिटल बनने के चक्कर में धोखाधड़ी का शिकार हो रही है। इण्टरनेट के माध्यम से नकारात्मक विचारधारा एवं राष्ट्र विरोधी ताकतों को भी सह मिल रहा है। पेड न्यूज, फेक न्यूज, नशीली दवाओं के सेवन, माफिया गिरोह बन्दी, देहव्यापार, पोर्न वीडियो, अश्लील फिल्म, अश्लील धारावाहिक, हिंसात्मक विडियो, अवैध हथियारों की खरीद, व्यक्तिगत जासूसी, अश्लील साहित्य, आनलाइन जुआ, आन लाइन वीडियो गेम की लत, पैसों की जाल साजी, आतंकवादी गतिविधियां, धार्मिक उन्माद, एक दूसरे धर्म के खिलाफ फर्जी खबरों को चला कर अफवाह फैलाया जाता है, इससे राष्ट्रविरोधी साम्प्रदायिक शक्तियों को बल मिल रहा है। ग्रामीण युवा लाइक– पोस्ट, शेयर के चक्कर में फंसकर, सच और झूठ के बीच भ्रमित हो रहा है।

खेती– किसानी में डिजिटल क्रान्ति ने बदलाव किए राष्ट्रीय बागवानी बोड सीधे किसानों के लाभ के लिए 'हिन्दी प्रसार साहित्यश प्रकाशित करने की सहायता प्रदान की है, तकनीकी आधारित वीडियो, फिल्मों के निर्माण के लिए सहायता राशि प्रदान की जाती है। समाचार, पत्र–पत्रिकाओं आदि में किसानोपयोगी विज्ञापन भी प्रकाशित किये जा सकते हैं।'[8] बागवानी फसलों के बेहतर उत्पादन को आकर्षक बाजार कीमत सुनिश्चित करने के लिए, 'राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड' द्वारा श्बागवानी बाजार सूचना सेवाश का शुभारम्भ किया गया है।[9] डिजिटल क्रान्ति का प्रभाव, सब्ज़ियों, फलों, फूलों की खेती के लिए, बीज, बौने प्रजाति के पौधों को लगाना, फसल की देखभाल करना, मिट्टी की जांच, नई संकर प्रजाति के फसलों को तैयार करना, फसलों के रोग आदि की जानकारी मोबाइल द्वारा मिल सकता है।

एक दशक पूर्व शासकीय राशन की दुकानों पर अधिक घटतौली, चीनी, मिट्टी का तेल आदि में निर्धारित मूल्यों से अधिक मूल्य वसूलना, गेहूं– चावल में कंकड़ मिला देना, आम बात थी, किन्तु सोशल मीडिया के द्वारा, ग्रामीण युवाओं में अपने अधिकार को लेकर जागरूकता आयी, साथ ही वीडियो बनाकर उच्च अधिकारियों से शिकायत करनी प्रारम्भ की तो ऐसी समस्याओं में कमी आयी है। प्रत्येक ग्राम में ऐसे व्यक्ति भी रहते हैं, जो गांव वालों के लिए मिट्टी के बरतन, लकड़ी की वस्तुएं, धातु के बरतन, कपड़ा बुनना, गहने पर नग, एवं पच्चीकारी, कुटीर उद्योग आदि वस्तुओं का निर्माण होता है। पहले सीमित संचार साधनों के कारण इन वस्तुओं का प्रचार प्रसार नहीं हो पाता था, किन्तु सोशल मीडिया के जरिए ग्रामीण छोटे– छोटे उत्पाद वैश्वीक जगत में प्रचारित–प्रसारित करने लगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत में जन संचार और मीडिया, मधुकर लेले, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पहली, आवृत्ति–2022, पृष्ठ संख्या–13।
2. भारत में जन संचार और मीडिया, मधुकर लेले, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पहली, आवृत्ति–2022, पृष्ठ संख्या–18 ।3- https://yojana-in- डिजिटल इण्डिया मिशन 2024.
3. https://yojaa-in डिजिटल इंडिया मिशन 2024.
4. अन सोशल नेटवर्क, लेखकरू दिलीप मंडल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021, पृष्ठ संख्या–68.
5. कुरुक्षेत्र, गई 2016, पृष्ठ संख्या–21.
6. प्रतियोगिता दर्पण, नवम्बर,2017, पृष्ठ संख्या–102.
7. कुरुक्षेत्र, अप्रैल 2017, पृष्ठ संख्या– 14.
8. कुरुक्षेत्र, अप्रैल ,2017, पृष्ठ संख्या –15 Ambedkar, B.R.(25April 1921), Provincial Decentralization of Imperial Finance in British India University of London, 25 April 2019, Via- Google Books.

*****